श्री खाटू श्याम चालीसा

दोहा
श्री गुरु चरणन ध्यान धर, सुमीर सिच्चदानंद। श्याम
चालीसा बणत है, रच चौपाई छंद॥

चालीसा
श्याम-श्याम भिज बारंबारा।
सहज ही हो भवसागर पारा॥

इन सम देव न दूजा कोई।
fदन दयालु न दाता होई॥

भीम सुपुत्र अfहलावाती जाया।
कही भीम का पौत्र कहलाया॥

यह सब कथा कही कल्पांतर।
तfनक न मानो इसमें अंतर॥

बबरीक fवष्णु अवतारा।
भक्तन हेतु मनुज तन धारा॥

बासुदेव देवकी प्यारे।
जसुमfत मैया नंद दुलारे॥

मधुसूदन गोपाल मुरारी।
वृजfकशोर गोवधन धारी॥

fसयाराम श्री ह र गोfबंदा।
fदनपाल श्री बाल मुकंुदा॥

दामोदर रण छोड़ fबहारी।
नाथ द्वा रकाधीश खरारी॥

राधाबल्लभ रुक्मfण कंता।
गोपी बल्लभ कंस हनंता॥

मनमोहन fचत चोर कहाए।
माखन चो र-चा र कर खाए॥

मुरलीधर यदुपfत घनश्यामा।
कृष्ण पfतत पावन अfभरामा॥

मायापfत लक्ष्मीपfत ईशा।

पुरुषोत्तम केशव जगदीशा॥

विश्वपति जय भुवन पसारा।
दीनबंधु भक्तन रखवारा॥

प्रभु का भेद न कोई पाया।
शेष महेश थके मुनिराया॥

नारद शारद ऋषि योगिंदरर।
श्याम-श्याम सब रटत निरंतर॥

कवि कोदी करी कनन गिनंता।
नाम अपार अथाह अनंता॥

हर सृष्टी हर सुग में भाई।
ये अवतार भक्त सुखदाई॥

हृदय माहि क र देखु विचारा।
श्याम भजे तो हो निस्तारा॥

कौर पढ़ावत गणिका तारी।
भीलनी की भिक्त बलिहारी॥

सती अहिल्या गौतम नारी।
भई श्रापवश शिला दुलारी॥

श्याम चरण रज चित लाई।
पहुंची पति लोक में जाही॥

अजामिल अरु सदन कसाई।
नाम प्रताप परम गति पाई॥

जाके श्याम नाम अधारा।
सुख लहहि दुःख दूर हो सारा॥

श्याम सलोवन है अति
सुंदर। मोर मुकुट सिर तन
पीतांबर॥

गले बैजंती माल सुहाई।
छवि अनूप भक्तन मान भाई॥

श्याम-श्याम सुमिरहु दिन-राती।
श्याम दुपह र कर परभाती॥

श्याम सारथी जिस रथ के।
रोड़े दूर होए उस पथ के॥

श्याम भक्त न कही पर हारा। भीर
प र तब श्याम पुकारा॥

रसना श्याम नाम रस पी ले।
जी ले श्याम नाम के ही ले॥

संसारी सुख भोग मिलेगा।
अंत श्याम सुख योग मिलेगा॥

श्याम प्रभु हैं तन के काले। मन
के गोरे भोले-भाले॥

श्याम संत भक्तन हितकारी।
रोग-दोष अध नाशे भारी॥

प्रेम सहित जब नाम पुकारा।
भक्त लगत श्याम को प्यारा॥

खाटू में हैं मथुरावासी।
पारब्रह्म पूण अविनाशी॥

सुधा तान भ र मुरली बजाई।
चहु दिशि जहां सुनी पाई॥

वृद्ध-बाल जेते ना र नर।
मुग्ध भये सुनि बंशी स्वर॥

हड़बड़ कर सब पहुंचे जाई।
खाटू में जहां श्याम कन्हाई॥

जिसने श्याम स्वरूप निहारा।
भव भय से पाया छुटकारा॥

दोहा

श्याम सलोने संवारे, बबरीक तनुधार।
इच्छा पूण भक्त की, करो न लाओ बार॥